RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

जूठन, बलुतं आत्मकथाओं में अम्बेडकरवादी चेतना

प्रा.राजेंद्र ननावरे, आ. शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता.जावली, जि. सातारा, महाराष्ट्र, मोबा. 8600182083

प्राचीन काल से भारतीय समाज व्यवस्था में विषमता है। इसकी नींव वर्ण तथा जाति व्यवस्था पर आधारित है। ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ऐसे चार वर्ण और इसके अंतर्गत अलग–अलग जातियाँ है। जाति व्यवस्था के कारण उँच–नीच, श्रेष्ठ–कनिष्ठ, स्त्री–पुरूष आदि भेदभाव पूर्ण समाज रचना का जन्म हुआ। इसीकारण भारतीय एकता एवं अखंडता नष्ट हुई। समाज दलित व सवर्ण इन दो वर्गों में विभाजित हुआ दलित वर्ग का शूद्र, अछूत, अस्पृश्य, हरिजन कह कर अमानवीय शोषण हुआ। 19 वीं तथा 20 वीं सदी में समाज सुधारकों के सामाजिक प्रबोधन से जातिव्यवस्था में परिवर्तन हो गया और दलित–सवर्ण इन दोनों को समान माना गया। जाति व्यवस्था यह संविधान के तौर पर अपराध है, इस विचार का प्रचार–प्रसार होने लगा। समाज सुधारकों का कार्य, स्वतंत्र प्राप्ति आंदोलनों, दलित अस्मिता के आंदोलनों तथा भारतीय संविधान आदि के कारण दलित वर्ग को न्याय प्राप्त होने में बहुत मदद हुई। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपना पूरा जीवन दीन–दलित, अछूत, अस्पृश्य, पिछडे लोगों के जीवन उत्थान के लिये तथा राष्ट्रीय कार्य में लगाया। उनके सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक कार्य से अम्बेडकरवाद का जन्म हुआ। इससे जाति व्यवस्था के मनोरे को तहस–दहस करते हुए सामाजिक क्रांति से बहुत बडा परिवर्तन हुआ।

अम्बेडकरवादी विचारधारा

रूढीवादी, शोषित, अमानवीय, अवैज्ञानिक, अन्याय एवं असमान सामाजिक व्यवस्था से दुखी मानवों की इसी जन्म में आंदोलन द्वारा मुक्ति प्रदान कर, समता–स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं न्याय के आदर्श समाज में मानव और मानव (स्त्री–पुरूष समानता) के बीच सही संबंध प्रस्थापित करने वाली नयी क्रांतिकारी मानवतावादी विचारधारा अम्बेडकरवाद कही जाती है। जाति–वर्ग, छूत–अछूत, उँच–नीच, स्त्री–पुरूष, शैक्षिक व्यवस्था, वर्णभेद की व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव ला कर एक न्याय मुक्त, समतायुक्त, भेद–भाव मुक्त, शैक्षिक, वैज्ञानिक, तर्क संगत एवं मानवतावादी सामाजिक व्यवस्था ही अम्बेडकरवाद है। जिससे मानव इसी जन्म में रूढीवादी जंजीरों से मुक्त किया जाये।

डॉ. अम्बेडकरने महाड सत्याग्रह मनुस्मृति दहन, कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह, भारतीय संविधान निर्माण बौद्ध धर्मांतरण आदि घटनाओं की यशस्वीता से डॉ. अम्बेडकर का जीवन कार्य एक तत्वज्ञान बन गया है। उसे ही अम्बेडकरवाद कहा जाता है। यही अम्बेडकरवाद मानव मुक्ति के रूप में हिंदी, मराठी साहित्य में भी दिखाई देता है। अधिक रचनाकार उसे दलित साहित्य कहते है। लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'जूठन' तथा मराठी साहित्यिक दया पवार के 'बलुतं' इन आत्मकथाओं में अम्बेडकरवादी चेतना के दर्शन निम्ननुसार प्राप्त होते है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' को राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा 1997 में प्रथम 2009 में तृतीय संस्करण प्रकाशित हुआ। 160 पृष्ठों की यह रचना है।

मराठी साहित्यिक दया पवार की आत्मकथा 'बलुतं' को ग्रंथाली प्रकाशन क्र. 7 मुंबई द्वारा 1978 मे प्रथम पुनर्मुद्रण 2 फरवरी, 2007 में छठा संस्करण प्रकाशित हुआ। 182 पृष्ठों की यह रचना है।

दलित आत्मकथाकार अपनी जीवनी कथा लिखना चाहता है। लेकिन लिखते वक्त बहुत परेशानियाँ आती है। बिना हिचकिचहाट से वह लिखता रहे तो वह सफलता प्राप्त कर सकता है। लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि और मराठी साहित्यिक दया पवार इन दोनों ने अपनी आप बीती ही आत्मकथाओं के जरिये वास्तववादी तथा यथार्थवादी प्रस्तुत की है। उसकी विशेषताएँ निम्न है।

1) रूढी, परंपराओं का विरोध : वर्ण व्यवस्था तथा जाति व्यवस्था विषमता में जकडे इस भारत को मुक्ति दिलाने के लिए डॉ. अम्बेडकर ने संविधान के द्वारा भरसक प्रयास किया। भारत में सवर्ण–दलित इस विषमता को नष्ट किया और समता को प्रस्थापित किया। संविधान में 'स्वतंत्रता, समता, बंधुता और न्याय इस मुलभुत अधिकारों को प्रस्थापित किया तथा रूढी परंपराओं का विनाश किया। इसी अम्बेडकरवादी चेतना को लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि और लेखक दया पवार ने अपनाकर रूढी, पंरपराओं का विरोध अपनी आत्मकथाओं के द्वारा स्पष्ट किया है –

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

ओमप्रकाश वाल्मीकि अपनी माँ का संदर्भ देते है – ''अपनी औकात में रह चुहडी उठा टोकरा, दरवाजे से चलती बन।''[1] तब माँ शेरनी बनकर फटकारती हुई कहती है, ''इसे ढाके अपने घर में धरले, कल तडके बारातियों कों नाश्ते में खिला दे।''[2] पिटाई के लिये जब त्यागी हाथ उठाता है तब माँ उसका हाथ पकड कर विरोध करती है और तबसे जूठन बंद हो जाता है। यहाँ स्पष्ट हैं, कि अपमानित जी कर दूसरे के फेंके टूकडे जिना गलत है। इसी परंपराका विरोध करते हुए उसे बंद करना ही यहाँ सफलता है।

लेखक दया पवार के 'बलुत' आत्मकथा में भी इसीतरह परंपरा का विरोध करते हुए एक प्रसंग को प्रस्तुत किया है – ''पाण्याला जाता येता महार बायकांची सावली मारूतीवर पडते, देव विटाळतो, म्हणून एकदा गावक-यांनी वाट बंद केली. विहिरीवर दुस-या मार्गानं जायचं म्हणजे तळ्याच्या काठानं चिखलातून वाट तुडवायला लागायची आणि तीही मैलभर लांबीची महाराजांनी ही वाट खुली करावी म्हणून गावाशी झुंज दिली. कोर्ट–कचे-या झाल्या. 'आमची वहिवाट आम्ही सोडणार नाही; वाटलं तर तुम्ही मारूतीला दुसरीकडं बसवा.''[3]

परिणामतः यहाँ स्पष्ट होता है कि हिंदूओं के परंपराओं से आये हुए विचारों के कारण महार लोगों पर बहुत अत्याचार हुए लेकिन एकत्रित होकर डटकर मुकाबला किया तो यही अन्याय दूर हुआ। और उन्हें सफलता मिली।

अर्थात रूढी पंरपराएँ यह सब झूठ है, सच यह है कि मनुष्य यह मनुष्य है और सभी समान है।

2) शोषण से मुक्ति: शोषण जिन–जिनका हो रहा है उसे मुक्ति दिलाने का कार्य अम्बेडकरवाद करता है। अम्बेडकरवाद समता प्रस्थापित करता है। मनुष्य का जाति, धर्म, गरीबी, निम्न, कनिष्ठ, सेवक, गुलाम, स्त्री–पुरुष आदि के नाम पर भेद कर के उनका शोषण करना अमानवीय है। प्राचीन काल से दलितों का शोषण होता हुआ आया है। सामंतीवादी मनोवृत्ति आज भी दिखाई देती है, यह गलत है। चूहडे जाति में शादी के पश्चात दूल्हे को सलाम करने के लिये घर–घर जाना पडता है। महाजन उन्हे कपडा या पैसा देते है। इसका विरोध ओमप्रकाश वाल्मीकि कहते है तब पिताजी खुश होकर कहते है ''मुंशीजी बस! तुझे स्कूल भेजना सफल हो गया। म्हारी समझ में आ गया है इ बरीत तू तोडेगा''[4] वाल्मीकिजी मरे बैल उठाने का भी विरोध करता है। जब ओमप्रकाश को खाल उतारने का काम दिया जाता है तब भाभी कहती ''इनसे ये ना कराओ ––– भूखे रह लेंगे––– इन्हें इस गंधगी में ना घसिटो।''[5]

लेखक दया भी सामाजिक आंदोलन की ओर झूक गये थे। उन पर अम्बेडकर के विचारों का प्रभाव था उन्ही के काल में जो आंदोलन छेड जाते थे उनमें दया के जावजीबुवा यह दादाजी थे। वह भी अम्बेडकर आंदोलन में हिस्सा लेते थे। उसी काल में लोकर बोर्डपर वह सभासद के रूप में चूनीत हो गये थे उनके साथ लक्ष्मण नामक एक व्यक्ति समाज सुधार आंदोलन में भाग लेते थे और महारों को शोषण से मुक्त करने के लिये प्रयास भी करते थे। यह स्पष्ट करने के लिये दया पवार कहते है – ''महारांनी घाण कामं सोडावीत, स्वाभिमानानं जगावं, असं ते आपल्या अडाणी भाषेत गावोगाव जाऊन सांगत।''[6]

3) शिक्षा का महत्व : प्राचीन काल से दीन–दलितों पर अन्याय–अत्याचार होते आ रहे है। इसका कारण शिक्षा ही था। दीन–दलितों को शिक्षा नही मिली इसीलिए बरसों से वह गुलामी में रहे है। अन्याय अत्याचार से से जूल्म ढोते रहे है। इस गुलामी तथा जुल्मों को दूर करने का भरसक प्रयास डॉ. अम्बेडकर ने किया। डॉ. अम्बेडकर ने इस गुलामी को दूर करने के लिये दलितों को एक संदेश दिया – ''शिक्षित बनो, संघटित हो जाओ, और संघर्ष करो।'' इस संदेश को जिस–जिसने अपनाया उनकी उन्नति हो गयी। ओमप्रकाश भी इस संदेश का पालन करते हुए अपनी उन्नती कर पाये है, ओमप्रकाश को उन्हीं के पिताने ही पढाया। आज का दलित पढ–लिख रहा है। विकास का साधन शिक्षा है। ओमप्रकाश बोर्ड की परिक्षा देता है तब फैना कहता है, ''अबे चूहडे के ––– आना ––– दो ––– अच्छा क्या पढ लिये सोहरे का दिमाग चढ गया है। अबे औकात मत भूला।''[7] जब ओमप्रकाश गीता रामायण पढता है तब लोग कहते है, ''देखो चूहडे का बामन बन रहा है।''[8]

ओमप्रकाश के पिता की तरह दया पवार की माँ भी है वह भी अम्बेडकर की विचारों से प्रभावित होकर अपने बेटे को पढाना चाहती है, बडा साहब बनाना चाहती है। दया की माँ ने अम्बेडकर ने विचार सूने थे वह – ''महाराच्या बाईला मुलांसंबंधी डोहाळे कोणते लागतात! – तो प्यून व्हावा किंवा

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

शिपाई व्हावा. पण ब्राम्हणाच्या बाईला डोहाळे लागतात; आपला मुलगा कलेक्टर व्हावा! असे डोहाळे महार आयांना का बरं लागू नयेत?''[9]

4) संगठन और संघर्ष का महामंत्र : दबे–कुचले दीन–दलितों पर होने वाले अन्याय अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए डॉ. अम्बेडकर ने संविधान का निर्माण किया, तथा सफलतापूर्वक कई आंदोलन किये। ''शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो'' इस मूलतत्व को अपनाकर ही दीन–दलित स्वयं पर होने वाले अन्याय अत्याचारों को जड से उखाड फेंक सकते है। इस मंत्र से आज का दलित युवा दलित आंदोलन, बुद्ध के विचारों का प्रचार–प्रसार, नागपूर की दीक्षा भूमि, मराठवाडा विश्वविद्यालय नामांतरण, आंबेडकर जयंती, 'शोषित संघ' की स्थापना आदि में अपना योगदान दे रहा है। ओमप्रकाश इसका उदाहरण है, परंतु (आर.पी.आइ) रिपब्लिकन पार्टी के भविष्य के बारे में ओमप्रकाश बहुत चिंतित है, उनका कथन है, ''रिपब्लिकन पार्टी अनेक गुटों में बट गयी है, प्रत्येक नेता स्वयं को बाबासाहब का वारीस मानकर अध्यक्ष बनने की होड में शामिल है। जिसका परिणाम यह हुआ कि, एक एक नेता, एक एक पार्टी बनी।''[10] अगर इसी तरह होता रहा तो दलितों का संगठन नही हो पायेगा और बाद में फिर से दलितों का शोषण होगा। यही स्थिति ओमप्रकाश को चिंतित करती है। डॉ. अम्बेडकर के विचारों से प्रभावित होकर महार लोग संगठीत होकर संघर्ष करते थे। झूठी, रूढी परंपराओं को तहस–दहस किया। इस बात को दया पवार 'बलुतं' में स्पष्ट करते है – ''आता गावाची कामं महारांनी बंद केलेली।''[11] झूठी रूढी परंपराओं की पोल भी दया पवारने खोल दी। ''मराठ्यांचा नवरदेव वेशी पाशी ओवाळला जात नाही. गावची जत्रा वाजविण्याचं बंद करतात. मरीआईचा गाडा एका गावावरून दुसऱ्या गावाला नेण्याचं बंद होतं. एकदा तर होळीच्या सणाच्या वेळी महारांनी विस्तव द्यायचं नाकारलं''[12]

अर्थात अम्बेडकर के विचारों से प्रभावित होकर लोगों ने संगठित होकर झूठी रूढी–परंपराओं को तहस–दहस किया।

5) बौद्ध दर्शन का महत्व : अम्बेडकरवाद बौद्ध दर्शन तथा चिंतन को विशेष महत्व देता है। आत्मा, ईश्वर, स्वर्ग–नर्क, कर्मकाण्ड आदि को बौद्ध धर्म ने नकारा है, बौद्ध धर्म यह वैज्ञानिकता के आधार पर चलता है। वर्ण तथा जाति व्यवस्था के विषमता को नकारते हुए मनुष्य के केंद्र में रखकर स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व और न्याय इस चतुःसूत्रि को मानकर जनकल्याण का संदेश इस बौद्ध धर्म में दिया है। ओमप्रकाश पर भी इसी विचार का प्रभाव पडा है, इसीलिये ही ओमप्रकाश मनुष्य की तरह जिने का प्रयास करता है। रूढी परंपराओं का विरोध करता है।

अंधविश्वास की बेडी को तोडकर वैज्ञानिकता अपना ने का साहस दया पवार के पिताजी में था। इसीलिये उन्होंने एक शादी में दोस्त के साथ गये थे वहा उन्हें एक दृश्य देखने को मिला था। एक नारि के शरिर में मानो काई देवी आ गयी थी यह दृश्य देखकर दया के पिताजी ने उसे गाली दी थी और उसे एक काँटा भी चुभाया था। उस दृश्य को दया प्रस्तुत करता है – ''लग्न लागून गेल्या बरोबर एका बाईच्या अंगात येतं. केस सोडलेली, कपाळाला मोठा मळवट भरलेली बाई घुमत असते. समोर रिंगण भरलेलं. त्यात लिंबू, टाचण्या, नारळ असा प्रकार. दादांना काय वाटतं कुणास ठाऊक! ते पुढं जातात. रिंगण लाथेनं उडवतात आणि बाईला आई करुन सणसणीत शिवी देतात. बाईचं झाड आणा जादाच बेताल झालेलं बाई घुमत–घुमतच म्हणते, ''आय झव म्हणाला''[13] इससे दया के पिताजी संतुष्ठ नही हुए, तो आगे दूसरी हरकते करते है – ''सारं वऱ्हाड हसण्यात दंग झालेलं. दादा तिच्या ढुंगणात बाभळीचा काटा टोचतात, तेव्हा कुठं तिच्या अंगावरचं जातं''[14]

अर्थात यह सब बकवास है, झूठ है यह साबीत होता है। इसीतरह अम्बेडकर विचारों से प्रभावित होने के कारण लोगों ने वैज्ञानिकता को अर्थात बुद्ध को अपनाया था।

इसीतरह स्त्री–पुरुष समानता, मनुवादी तथा ब्राम्हणवादी व्यवस्था का विरोध, वर्ण तथा जातिव्यवस्था का विरोध, ईश्वर को नकारना आदि बातों का जिक्र भी लेखक ओमप्रकाश 'जूठन' आत्मकथा में और दया पवार ने 'बलुतं' आत्मकथा में किया है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि लेखक ओमप्रकाश और दया पवार ने अपनी आत्मकथाओं में यथार्थता तथा वास्तविकता को अपनाकर सत्य दस्तावेजों को साथ लेकर मनःपूर्वक अभिव्यक्त किया है। यह दोनों लेखकों पर अम्बेडकर के विचारों का प्रभाव होने के कारण उनका जीवन भी सफल हो पाया है। अम्बेडकरवादी चेतना भरपूर मात्रा में विस्तृत हुई नजर आती है। तथा इसका विस्तार होना भी आवश्यक है। भारत में आज भी ऐसे कई वर्ग तथा उन पर अन्याय अत्याचार होते हुए नजर आते है। इस यथार्थता तथा वास्तविकता को अम्बेडकर वादी चेतना की नजरीया से देखना, परखना जरूरी

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

है। इसके साथ सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक क्षेत्र में भी अम्बेडकरवाद का विस्तार होना चाहिए। जिससे स्वतंत्रता, समता, बंधुता, न्याय, स्त्री–पुरूष समानता, अंधविश्वास का विरोध, वैज्ञानिक दृष्टिकोन का विकास होकर भारत यह एक बलशाली राष्ट्र बन जायेगा। इसीलिए सकारात्मक दृष्टि से अम्बेडकरवाद को अपनाया जाये।

संदर्भ

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि 'जूठन' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2009 ई. पृ. 21
2. ओमप्रकाश वाल्मीकि 'जूठन' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2009 ई. पृ. 21
3. दया पवार 'बलुतं' ग्रंथाली प्रकाशन क्र. 7, मुंबई प्र.सं.1978, पुर्नसंस्करण 2007 ई. पृ. 42
4. ओमप्रकाश वाल्मीकि 'जूठन' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2009 ई. पृ. 58
5. ओमप्रकाश वाल्मीकि 'जूठन' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2009 ई. पृ. 58
6. दया पवार 'बलुतं' ग्रंथाली प्रकाशन क्र. 7, मुंबई प्र.सं.1978, पुर्नसंस्करण 2007 ई. पृ. 56
7. ओमप्रकाश वाल्मीकि 'जूठन' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2009 ई. पृ. 72
8. ओमप्रकाश वाल्मीकि 'जूठन' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2009 ई. पृ. 72
9. दया पवार 'बलुतं' ग्रंथाली प्रकाशन क्र. 7, मुंबई प्र.सं.1978, पुर्नसंस्करण 2007 ई. पृ. 36
10. ओमप्रकाश वाल्मीकि 'जूठन' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2009 ई. पृ. 130
11. दया पवार 'बलुतं' ग्रंथाली प्रकाशन क्र. 7, मुंबई प्र.सं.1978, पुर्नसंस्करण 2007 ई. पृ. 57
12. दया पवार 'बलुतं' ग्रंथाली प्रकाशन क्र. 7, मुंबई प्र.सं.1978, पुर्नसंस्करण 2007 ई. पृ. 57
13. दया पवार 'बलुतं' ग्रंथाली प्रकाशन क्र. 7, मुंबई प्र.सं.1978, पुर्नसंस्करण 2007 ई. पृ. 20
14. दया पवार 'बलुतं' ग्रंथाली प्रकाशन क्र. 7, मुंबई प्र.सं.1978, पुर्नसंस्करण 2007 ई. पृ. 20